



સંપર્ક: ૯૯૨-૭૭

Fatiha Aur Isale Sawab Ka Tariqa (Gujarati)

ફાતિહા ઓર ઇસાલે સવાબ કા તરીકા

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાબિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હાજરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ ઝિયાલ

મુહમ્મદ ઇબ્રાહિમ અત્તાર કાદિરી ૨-મવી کاتب التوبة
السنة

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हजरत अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ
दीनी किताब या इस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी दुई दुआ पढ
लीजिये اللهُمَّ اجْعَلْهُ لِي فِي شَأْنِي وَمِنْ أَعْمَلِي وَبِحَسْبِ الْوَجْدِ
जे कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल करमा ! ओ अ-ज़मत और बुखुर्गी वाले. (المستطرف ج 1، دار الفكر بيروت)
नोट : अव्वल आबिर अेक अेक बार दुरुद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना
व अकीअ
व मस्जिरत
13 शव्वाल मुकर्रम 1428 हि.



इतिहा और इसाले सवाब का तरीका

येह रिसाला (इतिहा और इसाले सवाब का तरीका)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हजरत
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि र-जवी जियाई
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर करमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को गुजराती
रस्मुल पत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से
शाअेअ करवाया है. इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे
तराजिम को (ब जरीअअे मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ करमा कर
सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

झातिहा और ईसाले सवाब का तरीका

शैतान लाभ रोके मगर येह रिसाला (27 सफ़हात) मुकम्मल पढ
कर अपनी आभिरत का भला कीजिये.

महूम रिश्तेदार को प्वाब में देभने का तरीका

उजरते अल्लामा अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद मालिकी
कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي कहते हैं : उजरते सय्यिदुना हसन असरी
की भिदमते बा अ-र-कत में हाजिर हो कर अक औरत ने
अर्ज की : मेरी जवान बेटी झौत हो गई है, कोई तरीका ईशादि हो के मैं
उसे प्वाब में देभ लूं. आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने उसे अमल बताया. उस ने
अपनी महूमा बेटी को प्वाब में तो देभा, मगर ईस लाल में देभा के उस
के बदन पर तारकोल (या'नी डामर) का लिबास, गरदन में जञ्जर और
पाँउ में बेडियां हैं ! येह हैबत नाक मन्जर देभ कर वोह औरत कांप
उठी ! उस ने दूसरे दिन उजरते सय्यिदुना हसन असरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي
को प्वाब सुनाया, सुन कर आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى बहुत मगभूम हुअे.
कुछ अर्से बा'द उजरते सय्यिदुना हसन असरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुरद पाक पढा अद्लाह उंस पर दस रदमतें बेजता है. (मुसलम)

पवाब में अक लउकी को देभा, जो जन्नत में अक तप्त पर अपने सर पर ताज सजाओ बैठी है. आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ को देख कर वोह कडने लगी :

“मैं उसी पातून की बेटी हूँ, जिस ने आप को मेरी डालत बताई थी.”

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ ने इरमाया : उस के अकौल तो तू अजाब में थी, आभिर येह इन्किलाब किस तरह आया ? मरूम बोली : कब्रिस्तान के करीब से अक शप्स गुजरा और उस ने मुस्तफ़ा ज़ाने रदमत, शम्मे अजमे खिदायत, नोशअे अजमे जन्नत, मम्बअे जूदो सभावत, सरापा इजलो रदमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ पर दुरद लेजा, उस के दुरद शरीफ़ पढने की अ-र-कत से अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने डम 560 कभ्र वालों से अजाब उठा लिया.

अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर (التذكرة فی احوال الموتی وأمر الآخرة ج ۱ ص ۷۴ مأخوذاً) रदमत डो और उन के सदके डमारी बे हिसाब मग़िरत डो.

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! इस खिकायत से मा'लूम हुवा

के पडले के मुसल्मानों का बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّیِّدِ की तरफ़ पूब रुजूअ था, उन की अ-र-कतों से लोगों के काम भी बन जाया करते थे, येह भी मा'लूम हुवा के मरूम अजीजों को पवाब में देखने का मुता-लबा करने में सप्त इम्तिहान भी है के अगर मरूम को अजाब में देख लिया तो परेशानी का सामना डोगा.

इस खिकायत से इसावे सवाब की जबर दस्त अ-र-कत भी ज़ानने को मिली और येह भी पता चलता के सिर्फ़ अक बार दुरद शरीफ़

ईरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शम्स मुज पर दुइद पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रान)

पढ कर भी ईसाले सवाब किया जा सकता है. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे पायां रहमतों के भी क्या कहने ! के अगर वोह अक दुइद शरीफ़ ही को कबूल इरमा ले तो उस के ईसाले सवाब की ब-र-कत से सारे के सारे कब्रिस्तान वालों पर भी अगर अजाब हो तो उठा ले और उन सब को ईन्आमो ईकराम से मालामाल इरमा दे.

लाज रभ ले गुनाहगारों की नाम रहमान है तेरा या रभ !

बे सबब बप्श दे न पूछ अमल नाम गइफ़ार है तेरा या रभ !

तू करीम और करीम भी ऐसा

के नहीं जिस का दूसरा या रभ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जिन के वालिदैन या उन में कोई अक झैत हो गया हो तो उन को याहिये के उन की तरफ़ से गइलत न करें, उन की कब्रों पर हाज़िरी भी देते रहें और ईसाले सवाब भी करते रहें. इस जिम्न में 5 इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-हजा इरमाईये :

﴿1﴾ मकबूल हज का सवाब

जो ब निथ्यते सवाब अपने वालिदैन दोनों या अक की कब्र की जियारत करे, उज्जे मकबूल के बराबर सवाब पाये और जो ब कसरत इन की कब्र की जियारत करता हो, इरिश्ते उस की कब्र की (या'नी जब येह झैत होगी) जियारत को आओं. (नَوَاوِرُ الْأَصُولِ لِلْحَكِيمِ التَّرْمِذِيِّ ج ١ ص ٧٣ حديث ٩٨)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

करमाने मुस्तफ़ی صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पढा तलक़ीक़ वोह बढ भप्त हो गया. (उंन)

﴿2﴾ एस हज का सवाब

जो अपनी मां या बाप की तरफ़ से हज करे उन (या'नी मां या बाप) की तरफ़ से हज अदा हो जाये, ऐसे (या'नी हज करने वाले को) मज़ीद एस हज का सवाब मिले.

(दारुफ़्तनी ज २ व ३२९ हदीथ २०८७)

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! जब कभी नईली हज की सआदत हासिल हो तो झैत शुदा मां या बाप की निय्यत कर लीजिये ताके उन को भी हज का सवाब मिले, आप का भी हज हो जाये बढके मज़ीद एस हज का सवाब हाथ आये. अगर मां बाप में से कोई एस हाल में झैत हो गया के उन पर हज इर्ज़ हो युकने के बा वुजूद वोह न कर पाये थे तो अब औलाद को हजजे बढल का शरफ़ हासिल करना चाहिये. “हजजे बढल” के तइसीली अहकाम के लिये द्वा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ किताब “रईकुल उ-रमैन” का सईहा 208 ता 214 का मुता-लआ इरमाईये.

﴿3﴾ वालिदैन की तरफ़ से जैरात

जब तुम में से कोई कुछ नईल जैरात करे तो चाहिये के उसे अपने मां बाप की तरफ़ से करे के एस का सवाब उन्हें मिलेगा और एस के (या'नी जैरात करने वाले के) सवाब में कोई कमी भी नहीं आयेगी.

(शुबु अइयान ज ६ व २०० हदीथ ७९१)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿4﴾ रोझी में जे ज-र-कती की वजह

बन्दा जब मां बाप के लिये द्हुआ तर्क कर देता है उस का रिज़क कत्अ हो जाता है.

(जुमू अज्वाब ज १ व २९२ हदीथ २१३८)

करमाने मुस्तक़। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतभा सुबह और दस भरतभा शाम दुइटे पाक पढे।
 उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रामत मिलेगी. (अनुवाद)

﴿5﴾ जुमुआ को जियारते कब्र की इज़ीलत

जो शप्स जुमुआ के रोज अपने वालिदैन या एन में से किसी अेक की कब्र की जियारत करे और उस के पास सूरअे यासीन पढे बप्श दिया जाअे.

(الْكَوَالِ لابن عَدَى ج ٦ ص ٢٦٠)

लाज रभ ले गुनाहगारों की नाम रहमान है तेरा या रभ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

कड़न इट गअे !

मीठे मीठे ईस्वामी भाईयो ! अद्लाह एंज़ेज की रहमत बहुत बडी है, जो मुसल्मान दुन्या से रुप्सत हो जाते हैं उन के लिये ली उस ने अपने इजलो करम के दरवाजे खुले ही रभे हैं. अद्लाह एंज़ेज की रहमते बे पायां से मु-तअद्लिक अेक ईमान अइरोज खिकायत पढिये और जूमिये ! युनान्ये अद्लाह एंज़ेज के नबी उजरते सय्यिदुना अरमिया الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ अरमिया कुए अैसी कब्रों के पास से गुजरे जिन में अजाब हो रहा था. अेक साल बा'द जब फिर वही से गुजर हुवा तो अजाब अत्म हो युका था. आप अद्लाह एंज़ेज ने अरज की : يا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ अद्लाह एंज़ेज ! क्या वजह है के पडले एन को अजाब हो रहा था अब अत्म हो गया ? आवाज आई : “अै अरमिया ! एन के कड़न इट गअे, बाल बिअर गअे और कब्रें मिट गई तो मैं ने एन पर रहम किया और अैसे लोगों पर मैं रहम किया ही करता हूं.” (شَرْحُ الصُّنُوْرِ لِلْسُّيُوْطِيِّ ص ٣١٣)

अद्लाह की रहमत से तो जन्नत ही मिलेगी

अै काश ! मडल्ले में जगड उन के मिली हो

(वसाईले बप्शिश, स. 193)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

करमाने मुस्तका: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुइइ शरीफ न पढा उस ने जका की. (مبارزين)

“करम” के तीन दुइइ की निरुभत से घसाले सवाब के 3 घमान अइरोज इमाधल

(1) दुआओं की न-र-कत

मदीने के सुल्तान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मगिइरत निशान है: मेरी उभत गुनाइ समेत कअ्र में दाभिल होगी और जब निकलेगी तो बे गुनाइ होगी क्यूंके वोइ मुअमिनीन की दुआओं से बअश दी जाती है.

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ١ ص ٥٠٩ حديث ١٨٧٩)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

(2) घसाले सवाब का घन्तिजार !

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशदि मुशकबार है: मुर्दे का डाल कअ्र में डूबते हुअे इन्सान की मानिन्द है के वोइ शिदत से इन्तिजार करता है के बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ इस को पड़ोये और जब किसी की दुआ उसे पड़ोयती है तो उस के नजदीक वोइ दुन्या व मा झीडा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेइतर छोती है. अइलाइ एَزْوَجَلْ कअ्र वालों को उन के जिन्दा मुतअद्विकीन की तरफ से इदिय्या किया हुवा सवाब पडाओं की मानिन्द अता इरमाता है, जिन्दों का इदिय्या (या'नी तोइका) मुर्दों के लिये दुआअे मगिइरत करना है.

(شُعَبُ الْإِيْمَانِ ج ٦ ص ٢٠٣ حديث ٧٩٠٥)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोज़े जुमुआ दुइरे शरीफ़ पढेगा मे क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत कइगा. (क़ुरआन)

इहें घरों पर आ कर ँसाले सवाब का मुता-लबा करती हैं

भीठे भीठे ँस्वामी भाँययो ! मा'लूम हुवा भरने वाले अपनी क़श्रों पर आने जाने वालों को पढयानते हैं और उन्हें जिन्हों की दुआओं से फ़ाअेदा पढोंयता है, जब जिन्हा लोगों की तरफ़ से ँसाले सवाब के तोहफ़े आना बन्द होते हैं, तो उन को आगाडी हासिल हो जाती है और अल्हाड عَزَّوَجَلَّ उन्हें ँज्जत देता है तो घरों पर जा कर ँसाले सवाब का मुता-लबा भी करते हैं. मेरे आका आ'ला हज़रत ँमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह ँमाम अहमद रज़ा पान رَحْمَةُ الرَّحْمٰن عَلَيْهِ إِتَاوَا ر-जविय्या (मुभर्रज़ा) जिल्द 9 सईहा 650 पर नकल करते हैं : “गराँब” और “भजाना” में मन्कूल है के मुअमिनीन की इहें हर शबे जुमुआ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ की दरमियानी रात) रोज़े ँद, रोज़े आशूरा और शबे बराअत को अपने घर आ कर बाहर भडी रहती हैं और हर इह गमनाक बुलन्द आवाज़ से निदा करती (या'नी पुकार कर कलती) है के अै मेरे घर वालो ! अै मेरी औलाद ! अै मेरे कराबत दारो ! (हमारे ँसाले सवाब की निय्यत से) स-दका (भैरात) कर के हम पर मेहूरबानी करो.

हें कौन के गिर्या करे या फ़ातिहा को आअे

भेकस के उहाअे तेरी रहमत के भरन इल

(हदाँके बफ़िश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

(3) दूसरों के लिये दुआअे मग़्फ़िरत करने की इज़्तीलत

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो कोँ तमाम भोमिन

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अबुल-)

मर्दों और औरतों के लिये हुआअे मग़ि़रत करता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर मोमिन मर्द व औरत के ईवज अेक नेकी लिख देता है.

(مسند الشاميين للطبرانی ج ۳ ص ۲۳۴ حدیث ۲۱۰۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्खा मिल गया !

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! जूम जाईयो ! अरबों, अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्खा हाथ आ गया ! जाहिर है ईस वक्त इअे जमीन पर करोड़ों मुसल्मान मौजूद हैं और करोड़ों बल्के अरबों दुन्या से यल बसे हैं. अगर हम सारी उम्मत की मग़ि़रत के लिये हुआ करेगे तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** हमें अरबों, अरबों नेकियों का पजाना मिल जाअेगा. मैं अपने लिये और तमाम मुअमिनीन व मुअमिनात के लिये हुआ तहरीर कर देता हूं. (अव्वल आबिर दुइद शरीफ़ पठ लीजिये) **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** ढेरों नेकियां हाथ आअेंगी.

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَمُؤْمِنَةٍ. मेरी और हर मोमिन व मोमिना की मग़ि़रत करमा.

أَمِينٍ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

आप भी ठीपर दी छुई हुआ को अ-रबी या उई या दोनों जभानों में अबी और हो सके तो रोजाना पांयों नमाजों के आ'द भी पढने की आदत बना लीजिये.

बे सबब बपश दे न पूछ अमल

नाम गइंकार छे तेरा या रब !

(जौके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इरमाने मुस्तफ़ऱ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां त्नी ढो मुज पर दुरद पढो के तुम्हऱरऱ दुरद मुज तक पढोंयतऱ है. (طبرانی)

नूरऱनी लिबऱस

अेक बुजुर्ग ने अऱपने मईूम त्मऱई को ष्वऱब में देष कर पूछऱ : क्यऱ जिन्दऱ लोर्गों की दुआ तुम लोर्गों को पढोंयतऱ है ? मईूम ने जवऱब दियऱ : “हां अद्लऱह عَزَّ وَجَلَّ की कसम ! वऱह नूरऱनी लिबऱस की सूऱत में आतऱ है उसे हऱम पढन लेते हैं.”

(شَرْحُ الصُّدُورِ ص ३०)

जद्वअे यऱर से ढो कष्र आबऱद वदुशते कष्र से बयऱ यऱ रब !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

नूरऱनी तबऱक

मन्कूल है : जब कोई शप्स मय्यित को ईसऱवे सवऱब करतऱ है तो हजरते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام उसे नूरऱनी तबऱक में रब कर कष्र के कनऱरे ऱडे ढो जऱते हैं और कढते हैं : “अै कष्र वऱले ! येह हदिय्यऱ (यऱ'नी तोहफ़ऱ) तेरे घर वऱलों ने त्मेजऱ है कबूल कर.” येह सुन कर वऱह षुश ढोतऱ है और उस के पडऱसी अऱपनी महऱरुमी पर गभगीन ढोते हैं.

(أَيْضًا ص ३०८)

कष्र में आह ! धुप अंधेऱऱ है

इज़ल से कर दे यऱंढनऱ यऱ रब !

(वसऱईले बऱष्शिश, स. 88)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

मुर्दों की तऱ'दऱद के बरऱबर अज

इरमाने मुस्तफ़ऱ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ज्ने कष्रिस्तऱन में ग्यऱरह

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर ँस भरतबा दुइडे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाज़िल करमाता है. (अ़ा.)

भार सू-रतुल ँष्लास पढ कर मुर्दों को ँस का ँसाले सवाब करे तो मुर्दों की ता'दाद के बराबर ँसाले सवाब करने वाले को ँस का अज़ मिलेगा.

(جَمْعُ الْجَوَامِعِ لِلشُّيُوطِيِّ ج ٧ ص ٢٨٠ حديث ٢٣١٠٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सब कब्र वालों को सिफ़ारिशी बनाने का अमल

सुल्ताने ँो ज़हान, शफ़ीअे मुज़रिमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का करमाने शफ़ाअत निशान है : “जो शप्स कब्रिस्तान में ँापिल हुवा फिर उंस ने सू-रतुल झातिहा, सू-रतुल ँष्लास और सू-रतुतकासुर पढी फिर येह दुआ मांगी : या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! मैं ने जो कुँइ कुरआन पढा उंस का सवाब ँस कब्रिस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को पढोंया. तो वोह सब के सब कियामत के रोज़ ँस (या'नी ँसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे.”

(شَرْحُ الصُّوَرِ ص ٣١)

हर भले की भलाई का सदका

ँस बुरे को भी कर भला या रब

(जैके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सूरअे ँष्लास के ँसाले सवाब की हिक्कयत

हज़रते सय्यिदुना हम्माद मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي कहते हैं : मैं अेक रात मक्कअे मुकर्रमा رَأَاهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के कब्रिस्तान में सो गया. क्या देभता हूँ के कब्र वाले हलका ँर हलका भरे हैं, मैं ने उन से ँस्तिफ़सार किया (या'नी पूछा) : क्या कियामत काँभ हो गई ? उन्हों ने कहा : नहीं, बात ँर अस्ल येह है के अेक

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शम्स है. (ज़िबाय)

मुसल्मान भाई ने सू-रतुल ईप्लास पढ कर हम को ईसावे सवाब किया तो वोह सवाब हम अेक साल से तकसीम कर रहे हैं. (شَرْحُ الصُّدُورِ ص ३१२)

سَبَقْتُ رَحْمَتِي عَلَى غَضْبِي تूने जब से सुना दिया या रब !

आसरा हम गुनाहगारों का और मजबूत हो गया या रब !

(ज़ोके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

उम्मे सा'द के लिये कूआं

उजरते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा عَنْهُ اللهُ تَعَالَى ने अर्ज की :

या रसूलव्वाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरी मां इन्तिकाल कर गई हैं (मैं उन की तरफ़ से स-दका (या'नी भैरात) करना याहता हूँ) कौन सा स-दका अइजल रहेगा ? सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “पानी.” युनान्ये उनहों ने अेक कूआं भुदवाया और कहा : هَذِهِ لَأُمِّ سَعْدٍ या'नी “येह उम्मे सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के लिये है.”

(أَبُو دَاوُدَ ج २ ص १८۰ احديث १६८१)

गौस पाक का बकरा कहना कैसा ?

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! सय्यिदुना सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के

के इस ईशा'द : “येह उम्मे सा'द (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) के लिये है” के मा'ना येह है के येह कूआं सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की मां के ईसावे सवाब के लिये है. इस से येह ली मा'लूम हुवा के मुसल्मानों का गाय या बकरे वगैरा को भुजुर्गों की तरफ़ मन्सूब करना म-सलन येह कहना के “येह सय्यिदुना गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का बकरा है”

ईरमाने मुस्तक़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर हुज़ुरे पाक न पड़े. (एम)

ईस में कोई हरज नहीं के ईस से मुराद भी येही है के येह बकरा गौसे पाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَاقِ के ईसाले सवाब के लिये है. कुरबानी के जानवर को भी तो लोग अक दूसरे ही की तरफ़ मन्सूब करते हैं, म-सलन कोई अपनी कुरबानी का बकरा लिये यला आ रहा हो और अगर आप उस से पूछें के किस का बकरा है? तो उस ने कुछ ईस तरह जवाब देना है, “मेरा बकरा है” या “मेरे मामूं का बकरा है.” जब येह कहने वाले पर अे’तिराज नहीं तो “गौसे पाक का बकरा” कहने वाले पर भी कोई अे’तिराज नहीं हो सकता. हकीकत में हर शै का मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है और कुरबानी का बकरा हो या गौसे पाक का बकरा, ज़बह के वक्त हर ज़बीहा पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ही नाम लिया जाता है. अल्लाह اٰمِيْنَ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ. से नज़ात अफ़शे.

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“अल्लाह की रहमत के क्या कहने!” के उन्नीस हुज़ुर की निरबत से ईसाले सवाब के 19 म-दनी झूल

﴿1﴾ ईसाले सवाब के लइज़ी मा’ना हैं : “सवाब पड़ोयाना” ईस को “सवाब अफ़शना” भी कहते हैं मगर अुज़ुर्गो के लिये “सवाब अफ़शना” कहना मुनासिब नहीं, “सवाब नज़र करना” कहना अदब के ज़ियादा करीब है. ईमाम अहमद रज़ा आन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हुज़ुरे अकदस أَكْثَرُ السَّلَامَةِ عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ और नबी या वली को “सवाब अफ़शना” कहना अे अ-दबी है अफ़शना अडे की तरफ़ से छोटे को छोटा है अल्ले नज़र करना या हदिय्या करना कहे. (इतावा र-अविय्या, जि. 26, स. 609)

करमाने मुस्तफ़ा. عَسَىٰ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुइडे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

﴿2﴾ ईर्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज़, तिलावत, ना'त शरीफ़, जिक्कुल्वाह, दुइडे शरीफ़, अयान, दर्सा, म-दनी काफ़िले में सफ़र, म-दनी ईन्आमात, अलाकाई दौरा बराओ नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुता-लआ, म-दनी कामों के लिये ईन्किरादी कोशिश वगैरा हर नेक काम का ईसाले सवाब कर सकते हैं.

﴿3﴾ मय्यित का तीजे, दसवां, यालीसवां और बरसी करना बहुत अच्छे काम हैं के येह ईसाले सवाब के ही ज़राओअ हैं. शरीअत में तीजे वगैरा के अ-दमे जवाज़ (या'नी ना ज़ाईज होने) की दलील न होना खुद दलीले जवाज़ है और मय्यित के लिये जिन्दों का दुआ करना कुरआने करीम से साबित है जो के "ईसाले सवाब" की अस्ल है. युनान्ये पारह 28 सू-रतुल हशर आयत 10 में ईशादि रब्बुल ईबाद है :

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِن بَعْدِهِمْ
يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا
وَإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا
بِالْإِيمَانِ

तर-ज-मओ कन्जुल ईमान : और वोह जो उन के आ'द आओ अर्ज़ करते हैं : ओ हमारे रब (عَزَّ وَجَلَّ) ! हमें अप्श दे और हमारे भाईयों को जो हम से पहले ईमान लाओ.

﴿4﴾ तीजे वगैरा का जाना सिर्फ़ ईसी सूरत में मय्यित के छोडे हुओे माल से कर सकते हैं जब के सारे वु-रसा बालिग हों और सब के सब ईज़ाज़त भी दें अगर ओक भी वारिस ना बालिग है तो सप्त हराम है. हां बालिग अपने डिस्से से कर सकता है.

(मुलपपस अज बहारे शरीअत, जि. 1, डिस्सा : 4, स. 822)

﴿5﴾ तीजे का जाना यूंके उमूमन दा'वत की सूरत में होता है ईस लिये

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: મુઝા પર દુરૂદ શરીફ પઢો અલલાહ ઈઝુરુલુમ પર રહમત ભેજેગા. (અબુ યુસુફ)

અગ્નિયા કે લિયે જાઈઝ નહીં સિર્ફ ગુ-રબા વ મસાકીન ખાએ, તીન દિન કે બા'દ ભી મયિત કે ખાને સે અગ્નિયા (યા'ની જો ફકીર ન હોં ઉન) કો બચના ચાહિયે. ફતાવા ૨-ઝવિયા જિલ્દ ૯ સફહા ૬૬૭ સે મયિત કે ખાને સે મુ-તઅલ્લિક એક મુફીદ સુવાલ જવાબ મુલા-હઝા હોં, સુવાલ : **مَكْمُولًا طَعَامُ الْمَيِّتِ يَمِثُّ الْقَبْرَ** (મયિત કા ખાના દિલ કો મુદ્દા કર દેતા હૈ.) મુસ્તનદ કૌલ હૈ, અગર મુસ્તનદ હૈ તો ઈસ કે કયા મા'ના હૈં ?

જવાબ : યેહ તજરિબે કી બાત હૈ ઓર ઈસ કે મા'ના યેહ હૈં કે જો તઆમે મયિત કે મુ-તમન્ની રહતે હૈં ઉન કા દિલ મર જાતા હૈ, ઝિક વ તાઅતે ઈલાહી કે લિયે હયાત વ યુસ્તી ઉસ મેં નહીં કે વોહ અપને પેટ કે લુકમે કે લિયે મૌતે મુસ્લિમીન કે મુન્તઝિર રહતે હૈં ઓર ખાના ખાતે વક્ત મૌત સે ગાફિલ ઓર ઉસ કી લઝઝત મેં શાગિલ. **وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ**

(ફતાવા ૨-ઝવિયા મુખર્જા, જિ. ૯, સ. ૬૬૭)

﴿6﴾ મયિત કે ઘર વાલે અગર તીજે કા ખાના પકાએં તો (માલદાર ન ખાએં) સિર્ફ ફુ-કરા કો ખિલાએં જૈસા કે મક-ત-બતુલ મદીના કી મતબૂઆ બહારે શરીઅત જિલ્દ અવ્વલ સફહા ૮૫૩ પર હૈ : મયિત કે ઘર વાલે તીજે વગૈરા કે દિન દા'વત કરેં તો ના જાઈઝ વ બિદ્અતે કબીહા હૈ કે દા'વત તો ખુશી કે વક્ત મશરૂઅ (યા'ની શર-અ કે મુવાફિક) હૈ ન કે ગમ કે વક્ત ઓર અગર ફુ-કરા કો ખિલાએં તો બેહતર હૈ. (એઝન, સ. ૮૫૩)

﴿7﴾ આ'લા હઝરત ઈમામ અહમદ રઝા ખાન **رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** ફરમાતે હૈં : “યૂંહી યેહલુમ યા બરસી યા શશમાહી પર ખાના બે નિચ્યતે ઈસાલે સવાબ મહૂઝ એક રસ્મી તૌર પર પકાતે ઓર “શાદિયોં કી ભાજી” કી તરહ બરાદરી મેં બાંટતે હૈં, વોહ ભી બે અસ્લ હૈ, જિસ સે એહતિરાઝ (યા'ની એહતિયાત

ईरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर कसरत से दुरुद पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्दिरत है. (भाग 1)

करनी) याहिये.” (इतावा २-अविथ्या मुपर्ज, जि. ९, स. ६७१) बल्के येह पाना ईसाके सवाब और दीगर अख्ठी अख्ठी निय्यतों के साथ होना याहिये और अगर कोई ईसाके सवाब के लिये पाने का अेहतिमाम न ली करे तब ली कोई हरज नहीं.

«8» ओक दिन के बख्ये को ली ईसाके सवाब कर सकते हैं, उस का तीजा वगैरा ली करने में हरज नहीं. और जो जिन्दा हैं उन को ली ईसाके सवाब किया जा सकता है.

«9» अम्बिया व मुर-सलीन عليهم الصلاة والسلام और किरिशतों और मुसल्मान जिन्नात को ली ईसाके सवाब कर सकते हैं.

«10» ग्यारहवीं शरीफ और २-जबी शरीफ (या'नी २२ २-जबुल मुरज्जब को सय्यिदुना ईमाम जा'फ़रे सादिक عليه के कूडे करना) वगैरा जाईज है. कूडे ही में भीर पिलाना जरूरी नहीं दूसरे बरतन में ली पिला सकते हैं, ईस को घर से बाहर ली ले जा सकते हैं, ईस मौकअ पर जो “कहानी” पढी जाती है वोह बे अस्ल है, यासीन शरीफ पढ कर 10 कुरआने करीम पत्म करने का सवाब कमाईये और कूडों के साथ साथ ईस का ली ईसाके सवाब कर दीजिये.

«11» दास्ताने अज्जब, शहजादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदह की कहानी वगैरा सब मन घउत किस्से हैं, ईन्हें हरगिज न पढा करें. ईसी तरह ओक पेम्फ्लेट बनाम “वसियत नामा” लोग तक्सीम करते हैं जिस में किसी “शैख अहमद” का प्वाब दर्ज है येह ली जा'ली (या'नी नकली) है ईस के नीचे मप्सूस ता'दाह में छपवा कर

ईरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अदवाउद एउर उस के लिये अक कीरात अज लिपता है और कीरात उडुद पडाड जितना है. (मुरावत)

बांटने की इजीलत और न तकसीम करने के नुकसानात वगैरा लिभे हैं उन का ल्मी अे'तिभार मत कीजिये.

﴿12﴾ औलियाअे किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام की झातिहा के खाने को ता'जीमन "नज़रो नियाज" कडते हैं और येड तभरुक है, ँसे अभीर व गरीब सभ आ सकते हैं.

﴿13﴾ नियाज और ँसाले सवाब के खाने पर झातिहा पढाने के लिये किसी को बुलवाना या बाडर के मेडमान को खिलाना शर्त नहीं, घर के अइराद अगर खुद ही झातिहा पढ कर आ लें जब ल्मी को ँ डरज नहीं.

﴿14﴾ रोजाना जितनी बार ल्मी खाना डरबे डाल अखी अखी निखतों के साथ खानें, उस में अगर किसी न किसी बुजुर्ग के ँसाले सवाब की निखत कर लें तो खूब है. म-सलन नाशते में निखत कीजिये : आज के नाशते का सवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ और आप के जरीअे तमाम अखियाअे किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को पडोंये. ँो पडर को निखत कीजिये : अभी जो खाना खानेंगे (या खया) उस का सवाब सरकारे गौसे आ'जम और तमाम औलियाअे किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام को पडोंये, रात को निखत कीजिये : अभी जो खानेंगे उस का सवाब ँमामे अडले सुन्नत ँमाम अडमद रजा खान رَحْمَةُ الرَّحْمَن और डर मुसल्मान मर्द व औरत को पडोंये या डर बार सल्मी को ँसाले सवाब किया जाअे और येडी अन्सभ (या'नी जियादा मुनासिब) है. याद रहे ! ँसाले सवाब सिई उसी सूरत में ँो सकेगा जब के वोड खाना किसी अखी निखत से खया जाअे म-सलन ँबादत पर कुव्वत डसिल करने की निखत से खया तो येड खाना खाना कारे सवाब हुवा और उस का ँसाले सवाब ँो सकता है.

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा किरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (अ. ५)

अगर अेक ली अख्शी निय्यत न हो तो खाना खाना मुभाह, के ईस पर न सवाब न गुनाह, तो जब सवाब ही न भिला तो ईसावे सवाब कैसा ! अलबत्ता दूसरों को ब निय्यते सवाब भिलाया हो तो उस भिलाने का सवाब ईसाल हो सकता है.

«15» अख्शी अख्शी निय्यतों के साथ खाने वाले खाने से पहले ईसावे सवाब करें या खाने के बाद, दोनों तरह दुरुस्त है.

«16» हो सके तो हर रोज (नफ़अ पर नहीं बल्के) अपनी बिकरी (Sale) का यौथाई झीसद (या'नी यार सो रुपै पर अेक रुपिया) और मुला-उमत करने वाले तन-ज्वाह का माहाना कम अउ कम अेक झीसद सरकारे गौसे आ'उम عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की नियाउ के लिये निकाल लिया करें, ईसावे सवाब की निय्यत से ईस रकम से दीनी किताबें तकसीम करें या किसी ली नेक काम में खर्य करें اللهُ عَزَّوَجَلَّ ईस की ब-र-कतें खुद ही देख लेंगे.

«17» मस्जिद या मद्रसे का किया म-द-कअे खरिय्या और ईसावे सवाब का बेहतरीन जरीआ है.

«18» जितनों को ली ईसावे सवाब करें अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से उम्मीद है के सब को पूरा मिलेगा, येह नहीं के सवाब तकसीम हो कर टुकडे टुकडे मिले. ईसावे सवाब करने वाले के सवाब में कोई कमी वाकेअ नहीं होती बल्के येह उम्मीद है के उस ने जितनों को ईसावे सवाब किया उन सब के मजभूअे के बराबर ईस (ईसावे सवाब करने वाले) को सवाब मिले. म-सलन कोई नेक काम किया जिस पर

ईरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुज पर अक बार दुरद पाक पढा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रकमतें भेजता है. (स्ल)

ईस को दस नेकियां मिलीं अब ईस ने दस मुर्दों को ईसावे सवाब किया तो हर अक को दस दस नेकियां पड़ोंगेंगी जब के ईसावे सवाब करने वाले को अक सो दस और अगर अक हजार को ईसावे सवाब किया तो ईस को दस हजार दस. (और ईसी कियास पर)

(बहारे शरीअत, जि. 1, छिस्सा : 4, स. 850)

«19» ईसावे सवाब सिर्फ मुसल्मान को कर सकते हैं. काफिर या मुरतद को ईसावे सवाब करना या उस को “मर्हूम”, जन्ती, जुल्द आशियां, बेंकठ बासी, स्वर्ग बासी कलना कुई है.

ईसावे सवाब का तरीका

ईसावे सवाब (या'नी सवाब पड़ोंयाने) के लिये दिल में निखत कर लेना काई है, म-सलन आप ने किसी को अक रुपिया भैरात दिया या अक बार दुरद शरीफ पढा या किसी को अक सुन्नत बताई या किसी पर इन्फिरादी कोशिश करते हुअे नेकी की दा'वत दी या सुन्नतों भरा भयान किया. अल गरज कोई भी नेक काम किया आप दिल ही दिल में ईस तरह निखत कर लीजिये म-सलन : “अभी मैं ने जो सुन्नत बताई ईस का सवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पड़ोंये.”

اِنَّ سَواَبَ پَड़ोंयَ جَاअेगा. मजीद जिन जिन की निखत करेंगे उन को भी पड़ोंयेगा. दिल में निखत होने के साथ साथ जभान से कल लेना भी अय्छा है के येह सलामी رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से साबित है जैसा के हदीसे सा'द رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ में गुजरा के उन्हों ने कूंआं जुदवा कर ईरमाया هَذِهِ لِأَمِّ سَعْدٍ या'नी “येह उम्मे सा'द के लिये है.”

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (جران) ભૂલ ગયા. (જનત કા રસ્તા ભૂલ ગયા.)

ઈસાલે સવાબ કા મુરવ્વજા તરીકા

આજ કલ મુસલ્માનોં મેં ખુસૂસન ખાને પર જો ફાતિહા કા તરીકા રાઈજ હૈ વોહ ભી બહુત અચ્છા હૈ. જિન ખાનોં કા ઈસાલે સવાબ કરના હૈ વોહ સારે યા સબ મેં સે થોડા થોડા ખાના નીઝ એક ગિલાસ મેં પાની ભર કર સબ કુછ સામને રખ લીજિયે.

અબ :

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝

પઠ કર એક બાર :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝ ۱ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝ ۲ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ ۳ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ۝ ۴ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ ۵ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِي دِينِ ۝ ۶

ત્રીન બાર :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ ۝ ۱ اللهُ الصَّمَدُ ۝ ۲ لَمْ يَلِدْ ۝ ۳ وَلَمْ يُولَدْ ۝ ۴

ईरमाने मुस्तफ़ी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लु अलैहि व अलैहि सलम) को देखा कि जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरदे पाक न पढ़ा तब तक कि वो बड़े बड़े हो गया। (अहमद)

अक बार :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ٥
 قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ١ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ٢ وَمِنْ شَرِّ
 غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ٣ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ٤ وَمِنْ
 شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ٥

अक बार :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ٥
 قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ١ مَلِكِ النَّاسِ ٢ إِلَهِ النَّاسِ ٣
 مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ٤ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي
 صُدُورِ النَّاسِ ٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ٥

अक बार :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ٥
 الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ١ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ٢ مَلِكِ
 يَوْمِ الدِّينِ ٣ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ٤ اهْدِنَا
 الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ٥ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ٥

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શબ્દ મુઝ પર દુરૂદે પાક પઢના બૂલ ગયા વોહ જન્મત કા રસ્તા બૂલ ગયા. (ટીપ્પણી)

اللَّهُ وَخَاتَمِ النَّبِيِّينَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

(પ ૨૨, અહઝાબ: ૬૦)

﴿5﴾ إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

(પ ૨૨, અહઝાબ: ૦૬)

અબ દુરૂદ શરીફ પઢિયે :

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَالْأَبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صَلَاةً وَسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ

ઈસ કે બા'દ યેહ આયાત પઢિયે :

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝

وَسَلَامٌ عَلَى

الرُّسُلِينَ ۝ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

(પ ૨૩, અલ્ફત્ત: ૧૮૦-૧૮૨)

અબ ફાતિહા પઢાને વાલા હાથ ઉઠા કર બુલન્દ આવાઝ સે “અલ ફાતિહા” કહે. સબ લોગ આહિસ્તા સે યા'ની ઈતની આવાઝ સે કે સિર્ફ ખુદ સુને સૂ-રતુલ ફાતિહા પઢે. અબ ફાતિહા પઢાને વાલા ઈસ તરહ એ'લાન કરે : “મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! આપ ને જો કુછ પઢા હૈ ઉસ કા સવાબ મુઝે દે દીજિયે.” તમામ હાઝિરીન કહ દે : “આપ કો દિયા.” અબ ફાતિહા પઢાને વાલા ઈસાલે સવાબ કર દે.

ईरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदुई पाक न पढा तलक की वोह बट् बप्त हो गया. (अन०)

आ'ला हजरत का इत्हा ताली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى का इतिहा का तरीका

ईसावे सवाब के अल्फ़ाज़ लिखने से कबल ईमामे अहले सुन्नत आ'ला हजरत मौलाना शाह अहमद रज़ा ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इतिहा से कबल जो सूरते वगैरा पढते थे वोह भी तलरीर की जाती हैं :
 अक बार :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ مَلِكِ
 يَوْمِ الدِّينِ ۝ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝ اهْدِنَا
 الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝
 غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝

अक बार :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۝ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا
 نَوْمٌ ۝ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۝ مَنْ ذَا الَّذِي
 يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا
 خَلْفَهُمْ ۝ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۝
 وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۝ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۝

ईरमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस भरतभा सुब्ह और दस भरतभा शाम दुइडे पाक पढा।
(उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी.) (مُعْتَمِدَات)

(प ३, البقرة: २००)

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

तीन बार :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ ۱ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ ۲ لَمْ يَلِدْ ۝ ۳ وَلَمْ
يُولَدْ ۝ ۴ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝ ۵

ईसाले सवाब के लिये दुआ का तरीका

या अल्लाह! عَزَّ وَجَلَّ जो कुछ पढा गया (अगर जाना वगैरा है तो
ईस तरह से भी कलिये) और जो कुछ जाना वगैरा पेश किया गया है उस
का सवाब हमारे नाकिस अमल के लाईक नहीं बल्के अपने करम के
शायाने शान मईमत इरमा. और ईसे हमारी जानिब से अपने ध्यारे
महबूब, दानाअे गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में नज़र
पहोंया. सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तवस्सुत से तमाम
अम्बियाअे किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام तमाम सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम
औलियाअे ईजाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की जनाब में नज़र पहोंया. सरकारे
मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तवस्सुत से सय्यिदुना आदम सकिथ्युल्लाह
على نبينا وعليه الصلوة والسلام से ले कर अब तक जितने ईन्सान व जिन्नात
मुसल्मान हुअे या क्रियामत तक होंगे सब को पहोंया. ईस दौरान
बेहतर येह है के जिन जिन बुजुर्गों को ખुसूसन ईसाले सवाब करना है
उन का नाम भी लेते जाईये. अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइइ शरीफ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

और अपने पीरो मुर्शिद को भी नाम ब नाम ईसाले सवाब कीजिये. (झौत शु-दगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को पुशी हासिल होती है अगर किसी का भी नाम न लें सिर्फ़ इतना ही कल लें के या अल्लाह ! इस का सवाब आज तक जितने भी अहले इमान हुआ उन सब को पड़ोया तब भी हर अक को पड़ोय जायेगा. (إِنَّ كِتَابَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ))

अब हस्बे मा'भूल हुआ अत्म कर दीजिये. (अगर थोडा थोडा पाना और पानी निकाला था तो वोड दूसरे पानों और पानी में डाल दीजिये)

पाने की दा'वत की अहम अहतियात

जब भी आप के यहां नियाज या किसी किस्म की तकरीब हो, जमाअत का वक्त होते ही कोई मानेअे शर-ई न हो तो इन्किरादी कोशिश के जरीअे तमाम मेहमानों समेत नमाजे बा जमाअत के लिये मस्जिद का रुख कीजिये. बल्के जैसे अवकात में दा'वत ही मत रभिये के भीय में नमाज आये और सुस्ती के बाईस اَللّٰهُمَّ جَمَاعَتِ ذِي الْحَيْهَةِ जमाअत झौत हो जाये. दो पहर के पाने के लिये बा'द नमाजे जोहर और शाम के पाने के लिये बा'द नमाजे ईशा मेहमानों को बुलाने में गालिबन बा जमाअत नमाजों के लिये आसानी है. मेजबान, आवर्या, पाना तकसीम करने वाले वगैरा सबी को याहिये के जूं ही नमाज का वक्त हो, सारा काम छोड कर बा जमाअत नमाज का अहतिमाम करें. बुजुर्गों की “नियाज की दा'वत” की मसइकियत में अल्लाह جَزَّ وَجَلَّ की “नमाजे बा जमाअत” में कोताही बहुत बडी मा'सियत है.

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરૂદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શફાઅત કરૂંગા. (ક્રામલ)

મઝાર પર હાઝિરી કા તરીકા

બુઝુર્ગોં કી ઝાહિરી ઝિન્દગી મેં ભી કદમોં કી તરફ સે યા'ની ચેહરે કે સામને સે હાઝિર હોના ચાહિયે, પીછે સે આને કી સૂરત મેં ઉન્હેં મુડ કર દેખને કી ઝહમત હોતી હૈ. લિહાઝા બુઝુર્ગાને દીન કે મઝારાત પર ભી પાઈતી (યા'ની કદમોં) કી તરફ સે હાઝિર હો કર ફિર કિબ્લે કો પીઠ ઓર સાહિબે મઝાર કે ચેહરે કી તરફ રુખ કર કે કમ અઝ કમ ચાર હાથ (યા'ની તકરીબન દો ગઝ) દૂર ખડા હો ઓર ઈસ તરહ સલામ અર્ઝ કરે :

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا سَيِّدِي وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ۔

એક બાર સૂ-રતુલ ફાતિહા ઓર 11 બાર સૂ-રતુલ ઈખ્લાસ (અવ્વલ આખિર એક યા ત્રીન બાર દુરૂદ શરીફ) પઢ કર હાથ ઉઠા કર ઊપર દિયે હુએ તરીકે કે મુતાબિક (સાહિબે મઝાર કા નામ લે કર ભી) ઈસાલે સવાબ કરે ઓર દુઆ માંગે. “અહ્સનુલ વિઆઅ” મેં હૈ : વલી કે મઝાર કે પાસ દુઆ કબૂલ હોતી હૈ.

(માખૂઝ અઝ અહ્સનુલ વિઆઅ, સ. 140)

ઈલાહી વાસિતા કુલ ઓલિયા કા મેરા હર એક પૂરા મુદઆ હો

صَلِّ عَلَيَّ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ ! صَلِّ عَلَيَّ الْحَبِيبِ !

قرمانہ مؤسسا: صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم: مؤن ٲر ءرءه ٲاک کی کسرت کره بهشک یه ءومءاره لیهه ٲءارء هے. (الریءن)

هه ریس

مؤمؤن	مؤءءه	مؤمؤن	مؤءءه
مءؤم ریشهءار کو ٲواہ مہءه ٲنه کا ترکیب	1	نؤرانی ٲهاک	9
مکءؤل ءء کا سواہ	3	موءؤ کی ٲا'ءاء هه ہراہر اءء	9
ءس ءء کا سواہ	4	سہ کءر والوں کو سیه ریشه ہنانه کا امہل	10
والیهءن کی ٲرءه سه ٲہراء	4	سؤره ءٲواس هه ءساہه سواہ کی ءیکایٲ	10
رؤئی مہءه ہه ہر-کٲی کی وءء	4	ءممه سا'ء رضى اللہ تعالیٰ عنہا هه لیهه کؤنآ	11
ءؤمؤا کو ءیيارهه کءر کی ءئیلٲ	5	گؤس ٲاک کا ہکرا کءنا کؤسا ?	11
کءن ءٲ گاهه !	5	ءساہه سواہ هه 19 م-ءنی ءؤل	12
ءساہه سواہ هه 3 ءمان اءرؤء ءءاءل	6	ءساہه سواہ کا ترکیب	18
ءؤآؤوں کی ہر-کٲ	6	ءساہه سواہ کا مؤرؤءء ترکیب	19
ءساہه سواہ کا ءنٲءار !	6	آا'لا ءءرء رضى اللہ تعالیٰ عنہ کا فاءهه کا ترکیب	23
ءہءه ٲر آا کء ءساہه سواہ کا مؤٲا-لہا کرنی هے	7	ءساہه سواہ هه لیهه ءؤآا کا ترکیب	24
ءؤسؤوں هه لیهه ءؤآاهه مؤءرءء کرنه کی ءئیلٲ	7	ٲانه کی ءا'ٲٲ کی اءہم اءهٲیٲاٲ	25
ارہوں نهءکیاں کمانه کا آاسان نؤسؤا مہل گہا !	8	مءار ٲر ءاءیره کی ترکیب	26
نؤرانی لہاس	9	مآاہہء و مرآهء	27

مآءءمراءء

مءؤم	کٲاب	مءؤم	کٲاب
ءار اءءب العلمیه ہیرهٲ	ا کال	مءءه المہہ ہاب المہہ کراٲی	قرآن مءه
ءار السلام مہر	الءکره	ءار اءیاء ٲراء العربیہ ہیرهٲ	ابوءاء
مرکز الہسءء برکاء رضاهء	شرح الصءور	مہہءه الاءلیاء مءان شریف	ءار قٲنی
مءءه المہہ ہاب المہہ کراٲی	اھن الوعاہ	ءار اءءب العلمیه ہیرهٲ	مءءم اوسٲ
رضافا ءءءشن مرکز الاءلیاء لاهور	قءاؤی رضویہ	ءار اءءب العلمیه ہیرهٲ	شعب الایمان
مءءه المہہ ہاب المہہ کراٲی	ہہار شریعء	مءءه الامام البخاری	نوءر الاصول
مءءه المہہ ہاب المہہ کراٲی	ءءانء ہءشش	مؤسسه الرساله ہیرهٲ	مسء الشاہین
مءءه المہہ ہاب المہہ کراٲی	وسائل ہءشش	ءار اءءب العلمیه ہیرهٲ	مءء الءوامع



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِينَ وَبَعْدُ فَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्खा मिल गया !

करमाने मुसलमाँ : **سَلِّ عَلَى مَنْ سَلَّيْنَا عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** : जो कोई तमाम मोमिन भर्तों और औरतों के लिये दुआये मज्दिरत करता है, अल्लाह **سَلِّ عَلَى مَنْ سَلَّيْنَا عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** उस के लिये हर मोमिन भर्त व औरत के ईवज अेक नेकी खिभ देता है. **سَلِّ عَلَى مَنْ سَلَّيْنَا عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जूम ज़रईये ! अरबों, अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्खा हाथ आ गया ! ज़ाहिर है ईस वक्त इअे जमीन पर करोड़ों मुसलमान मौजूद हैं और करोड़ों बलके अरबों दुन्या से खल बसे हैं. अगर हम सारी उम्मत की मज्दिरत के लिये दुआ करेंगे तो **سَلِّ عَلَى مَنْ سَلَّيْنَا عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** हमें अरबों, अरबों नेकियों का पजाना मिल ज़अेगा. मैं अपने लिये और तमाम मुअमिनीन व मुअमिनात के लिये दुआ तहररीर कर देता हूं. (अव्वल आपिर दुइद शरीफ पढ लीजिये) **سَلِّ عَلَى مَنْ سَلَّيْنَا عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ढेरों नेकियां हाथ आअेंगी.

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَمُؤْمِنَةٍ या'नी अै अल्लाह ! मेरी और हर मोमिन व मोमिना की मज्दिरत करमा. **اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَمُؤْمِنَةٍ** आप ली डिपर टी छुई दुआ को अ-रबी या उईू या दोनों जभानों में अली और छो सके तो रोजाना पांखों नमाजों के आ'द ली पढने की आहत बना लीजिये.

मक-त-अतुल मदीना

हा'वते ईस्लामी



ईजाने मदीना, श्री डोनिया बगीचे के सामने, मिर्जापूर, अहमदाबाद, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net